रामचरित मानस - अयोध्य काण्ड ६

प्रभु पद पदुम पराग दोहाई | सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहाई ||
सो करि कहउँ हिए अपने की | रुचि जागत सोवत सपने की ||
सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई | स्वारथ छल फल चारि बिहाई ||
अग्या सम न सुसाहिब सेवा | सो प्रसादु जन पावै देवा ||

अस कहि प्रेम बिबस भए भारी | पुलक सरीर बिलोचन बारी ||
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई | समउ सनेहु न सो कहि जाई ||
कृपासिंधु सनमानि सुबानी | बैठाए समीप गहि पानी ||
भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ | सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ ||

छंद:

रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला धनी |
मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी ||
भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से |
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से ||

सोरठा

देखि दुखारी दीन दुहु समाज नर नारि सब |
मघवा महा मलीन मुए मारि मंगल चहत || ३०१ ||

कपट कुचालि सीवँ सुरराजू | पर अकाज प्रिय आपन काजू ||
काक समान पाकरिपु रीती | छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ||
प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला | सो उचाटु सब कें सिर मेला ||
सुरमायाँ सब लोग बिमोहे | राम प्रेम अतिसय न बिछोहे ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

भय उचाट बस मन थिर नाहीं | छन बन रुचि छन सदन सोहाहीं ||
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी | सरित सिंधु संगम जनु बारी ||
दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं | एक एक सन मरमु न कहहीं ||
लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू | सरिस स्वान मघवान जुबानू ||

दोहा
भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहाइ |
लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पाइ || ३०२ ||

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे | निज सनेहँ सुरपति छल भारे ||
सभा राउ गुर महिसुर मंत्री | भरत भगति सब कै मति जंत्री ||
रामहि चितवत चित्र लिखे से | सकुचत बोलत बचन सिखे से ||
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई | सुनत सुखद बरनत कठिनाई ||

जासु बिलोकि भगति लवलेसू | प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू ||
महिमा तासु कहै किमि तुलसी | भगति सुभायँ सुमति हियँ हुलसी ||
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी | कबिकुल कानि मानि सकुचानी ||
कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई | मति गति बाल बचन की नाई ||

दोहा
भरत बिमल जसु बिमल बिधु सुमति चकोरकुमारि |
उदित बिमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि || ३०३ ||

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ | लघु मति चापलता कबि छमहूँ ||
कहत सुनत सति भाउ भरत को | सीय राम पद होइ न रत को ||
सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को | जेहि न सुलभ तेहि सरिस बाम को ||
देखि दयाल दसा सबही की | राम सुजान जानि जन जी की ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

धरम धुरीन धीर नय नागर | सत्य सनेह सील सुख सागर ||
देसु काल लखि समउ समाजू | नीति प्रीति पालक रघुराजू ||
बोले बचन बानि सरबसु से | हित परिनाम सुनत ससि रसु से ||
तात भरत तुम्ह धरम धुरीना | लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना ||

दोहा
करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात |
गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात || ३०४ ||

जानहु तात तरनि कुल रीती | सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ||
समउ समाजु लाज गुरुजन की | उदासीन हित अनहित मन की ||
तुम्हहि बिदित सबही कर करमू | आपन मोर परम हित धरमू ||
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा | तदपि कहउँ अवसर अनुसारा ||

तात तात बिनु बात हमारी | केवल गुरुकुल कृपाँ सँभारी ||
नतरु प्रजा परिजन परिवारू | हमहि सहित सबु होत खुआरू ||
जौं बिनु अवसर अथवँ दिनेसू | जग केहि कहहु न होइ कलेसू ||
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा | मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा ||

दोहा
राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम |
गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम || ३०५ ||

सहित समाज तुम्हार हमारा | घर बन गुर प्रसाद रखवारा ||
मातु पिता गुर स्वामि निदेसू | सकल धरम धरनीधर सेसू ||
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू | तात तरनिकुल पालक होहू ||
साधक एक सकल सिधि देनी | कीरति सुगति भूतिमय बेनी ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

सो बिचारि सहि संकटु भारी | करहु प्रजा परिवारु सुखारी ||
बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई | तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई ||
जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा | कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ||
होहिं कुठायँ सुबंधु सुहाए | ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए ||

दोहा
सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ |
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ || ३०६ ||

सभा सकल सुनि रघुबर बानी | प्रेम पयोधि अमिअ जनु सानी ||
सिथिल समाज सनेह समाधी | देखि दसा चुप सारद साधी ||
भरतहि भयउ परम संतोषू | सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू ||
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू | भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू ||

कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी | बोले पानि पंकरुह जोरी ||
नाथ भयउ सुखु साथ गए को | लहेउँ लाहु जग जनमु भए को ||
अब कृपाल जस आयसु होई | करौं सीस धरि सादर सोई ||
सो अवलंब देव मोहि देई | अवधि पारु पावौं जेहि सेई ||

दोहा
देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ |
आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ || ३०७ ||

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं | सभयँ सकोच जात कहि नाहीं ||
कहहु तात प्रभु आयसु पाई | बोले बानि सनेह सुहाई ||
चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन | खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन ||
प्रभु पद अंकित अवनि बिसेषी | आयसु होइ त आवौं देखी ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू | तात बिगतभय कानन चरहू ||
मुनि प्रसाद बनु मंगल दाता | पावन परम सुहावन भ्राता ||
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं | राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं ||
सुनि प्रभु बचन भरत सुख पावा | मुनि पद कमल मुदित सिरु नावा ||

दोहा
भरत राम संबादु सुनि सकल सुमंगल मूल |
सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल || ३०८ ||

धन्य भरत जय राम गोसाईं | कहत देव हरषत बरिआई ||
मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू | भरत बचन सुनि भयउ उछाहू ||
भरत राम गुन ग्राम सनेहू | पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू ||
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन | नेमु पेमु अति पावन पावन ||

मति अनुसार सराहन लागे | सचिव सभासद सब अनुरागे ||
सुनि सुनि राम भरत संबादू | दुहु समाज हियँ हरषु बिषादू ||
राम मातु दुखु सुखु सम जानी | कहि गुन राम प्रबोधीं रानी ||
एक कहहिं रघुबीर बड़ाई | एक सराहत भरत भलाई ||

दोहा
अत्रि कहेउ तब भरत सन सैल समीप सुकूप |
राखिअ तीरथ तोय तहँ पावन अमिअ अनूप || ३०९ ||

भरत अत्रि अनुसासन पाई | जल भाजन सब दिए चलाई ||
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू | सहित गए जहँ कूप अगाधू ||
पावन पाथ पुन्यथल राखा | प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ||
तात अनादि सिद्ध थल एहू | लोपेउ काल बिदित नहिं केहू ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

तब सेवकन्ह सरस थलु देखा | किन्ह सुजल हित कूप बिसेषा ||
बिधि बस भयउ बिस्व उपकारू | सुगम अगम अति धरम बिचारू ||
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा | अति पावन तीरथ जल जोगा ||
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी | होइहहिं बिमल करम मन बानी ||

दोहा
कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराउ |
अत्रि सुनायउ रघुबरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ || ३१० ||

कहत धरम इतिहास सप्रीती | भयउ भोरु निसि सो सुख बीती ||
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई | राम अत्रि गुर आयसु पाई ||
सहित समाज साज सब सादें | चले राम बन अटन पयादें ||
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं | भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ||

कुस कंटक काँकरीं कुराईं | कटुक कठोर कुबस्तु दुराईं ||
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे | बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे ||
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं | बिटप फूलि फलि तृन मृदुताहीं ||
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी | सेवहिं सकल राम प्रिय जानी ||

दोहा
सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात |
राम प्रान प्रिय भरत कहुँ यह न होइ बड़ि बात || ३११ ||

एहि बिधि भरतु फिरत बन माहीं | नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं ||
पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागा | खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा ||
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी | बूझत भरतु दिब्य सब देखी ||
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ | हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा | कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा ||
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई | सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ||
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा | देहिं असीस मुदित बनदेवा ||
फिरहिं गएँ दिनु पहर अढ़ाई | प्रभु पद कमल बिलोकहिं आई ||

दोहा
देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ |
कहत सुनत हरि हर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ || ३१२ ||

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू | भरत भूमिसुर तेरहुति राजू ||
भल दिन आजु जानि मन माहीं | रामु कृपाल कहत सकुचाहीं ||
गुर नृप भरत सभा अवलोकी | सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी ||
सील सराहि सभा सब सोची | कहुँ न राम सम स्वामि सँकोची ||

भरत सुजान राम रुख देखी | उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी ||
करि दंडवत कहत कर जोरी | राखीं नाथ सकल रुचि मोरी ||
मोहि लगि सहेउ सबहिं संतापू | बहुत भाँति दुखु पावा आपू ||
अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई | सेवौं अवध अवधि भरि जाई ||

दोहा
जेहिं उपाय पुनि पाय जनु देखै दीनदयाल |
सो सिख देइअ अवधि लगि कोसलपाल कृपाल || ३१३ ||

पुरजन परिजन प्रजा गोसाई | सब सुचि सरस सनेहँ सगाई ||
राउर बदि भल भव दुख दाहू | प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू ||
स्वामि सुजानु जानि सब ही की | रुचि लालसा रहनि जन जी की ||
प्रनतपालु पालिहि सब काहू | देउ दुहू दिसि ओर निबाहू ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो | किएँ बिचारु न सोचु खरो सो ||
आरति मोर नाथ कर छोहू | दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठु हठि मोहू ||
यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी | तजि सकोच सिखइअ अनुगामी ||
भरत बिनय सुनि सबहिं प्रसंसी | खीर नीर बिबरन गति हंसी ||

दोहा
दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन |
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन || ३१४ ||

तात तुम्हारि मोरि परिजन की | चिंता गुरहि नृपहि घर बन की ||
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू | हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू ||
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु | स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु ||
पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई | लोक बेद भल भूप भलाई ||

गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें | चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें ||
अस बिचारि सब सोच बिहाई | पालहु अवध अवधि भरि जाई ||
देसु कोसु परिजन परिवारू | गुर पद रजहिं लाग छरुभारू ||
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी | पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ||

दोहा
मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक |
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक || ३१५ ||

राजधरम सरबसु एतनोई | जिमि मन माहँ मनोरथ गोई ||
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती | बिनु अधार मन तोषु न साँती ||
भरत सील गुर सचिव समाजू | सकुच सनेह बिबस रघुराजू ||
प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं | सादर भरत सीस धरि लीन्हीं ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

चरनपीठ करुनानिधान के | जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ||
संपुट भरत सनेह रतन के | आखर जुग जुन जीव जतन के ||
कुल कपाट कर कुसल करम के | बिमल नयन सेवा सुधरम के ||
भरत मुदित अवलंब लहे तें | अस सुख जस सिय रामु रहे तें ||

दोहा
मागेउ बिदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ |
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ || ३१६ ||

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी | अवधि आस सम जीवनि जी की ||
नतरु लखन सिय सम बियोगा | हहरि मरत सब लोग कुरोगा ||
रामकृपाँ अवरेब सुधारी | बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी ||
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो | राम प्रेम रसु कहि न परत सो ||

तन मन बचन उमग अनुरागा | धीर धुरंधर धीरजु त्यागा ||
बारिज लोचन मोचत बारी | देखि दसा सुर सभा दुखारी ||
मुनिगन गुर धुर धीर जनक से | ग्यान अनल मन कसें कनक से ||
जे बिरंचि निरलेप उपाए | पदुम पत्र जिमि जग जल जाए ||

दोहा
तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार |
भए मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार || ३१७ ||

जहाँ जनक गुर मति भोरी | प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी ||
बरनत रघुबर भरत बियोगू | सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू ||
सो सकोच रसु अकथ सुबानी | समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी ||
भेंटि भरत रघुबर समुझाए | पुनि रिपुदवनु हरषि हियँ लाए ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

सेवक सचिव भरत रुख पाई | निज निज काज लगे सब जाई ||
सुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा | लगे चलन के साजन साजा ||
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई | चले सीस धरि राम रजाई ||
मुनि तापस बनदेव निहोरी | सब सनमानि बहोरि बहोरी ||

दोहा
लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि |
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि || ३१८ ||

सानुज राम नृपहि सिर नाई | कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई ||
देव दया बस बड़ दुखु पायउ | सहित समाज काननहिं आयउ ||
पुर पगु धारिअ देइ असीसा | कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा ||
मुनि महिदेव साधु सनमाने | बिदा किए हरि हर सम जाने ||

सासु समीप गए दोउ भाई | फिरे बंदि पग आसिष पाई ||
कौसिक बामदेव जाबाली | पुरजन परिजन सचिव सुचाली ||
जथा जोगु करि बिनय प्रनामा | बिदा किए सब सानुज रामा ||
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे | सब सनमानि कृपानिधि फेरे ||

दोहा
भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेहँ मिलि भेंटि |
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि || ३१९ ||

परिजन मातु पितहि मिलि सीता | फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ||
करि प्रनामु भेंटी सब सासू | प्रीति कहत कबि हियँ न हुलासू ||
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई | रही सीय दुहु प्रीति समाई ||
रघुपति पटु पालकीं मगाईं | करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाई ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

बार बार हिलि मिलि दुहु भाई | सम सनेहँ जननी पहुँचाई ||
साजि बाजि गज बाहन नाना | भरत भूप दल कीन्ह पयाना ||
हृदयँ रामु सिय लखन समेता | चले जाहिं सब लोग अचेता ||
बसह बाजि गज पसु हियँ हारें | चले जाहिं परबस मन मारें ||

दोहा
गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत |
फिरे हरष बिसमय सहित आए परन निकेत || ३२० ||

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू | चलेउ हृदयँ बड़ बिरह बिषादू ||
कोल किरात भिल्ल बनचारी | फेरे फिरे जोहारि जोहारी ||
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं | प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं ||
भरत सनेह सुभाउ सुबानी | प्रिया अनुज सन कहत बखानी ||

प्रीति प्रतीति बचन मन करनी | श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी ||
तेहि अवसर खग मृग जल मीना | चित्रकूट चर अचर मलीना ||
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की | बरषि सुमन कहि गति घर घर की ||
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो | चले मुदित मन डर न खरो सो ||

दोहा
सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर |
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर || ३२१ ||

मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू | राम बिरहँ सबु साजु बिहालू ||
प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं | सब चुपचाप चले मग जाहीं ||
जमुना उतरि पार सबु भयऊ | सो बासरु बिनु भोजन गयऊ ||
उतरि देवसरि दूसर बासू | रामसखाँ सब कीन्ह सुपासू ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

सई उतरि गोमतीं नहाए | चौथें दिवस अवधपुर आए ||
जनकु रहे पुर बासर चारी | राज काज सब साज सँभारी ||
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू | तेरहुति चले साजि सबु साजू ||
नगर नारि नर गुर सिख मानी | बसे सुखेन राम रजधानी ||

दोहा
राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपबास |
तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि कीं आस || ३२२ ||

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे | निज निज काज पाइ पाइ सिख ओधे ||
पुनि सिख दीन्ह बोलि लघु भाई | सौंपी सकल मातु सेवकाई ||
भूसुर बोलि भरत कर जोरे | करि प्रनाम बय बिनय निहोरे ||
ऊँच नीच कारजु भल पोचू | आयसु देब न करब सँकोचू ||

परिजन पुरजन प्रजा बोलाए | समाधानु करि सुबस बसाए ||
सानुज गे गुर गेहँ बहोरी | करि दंडवत कहत कर जोरी ||
आयसु होइ त रहौं सनेमा | बोले मुनि तन पुलकि सपेमा ||
समुझव कहब करब तुम्ह जोई | धरम सारु जग होइहि सोई ||

दोहा
सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि |
सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि || ३२३ ||

राम मातु गुर पद सिरु नाई | प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ||
नंदिगावँ करि परन कुटीरा | कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ||
जटाजूट सिर मुनिपट धारी | महि खनि कुस साँथरी सँवारी ||
असन बसन बासन ब्रत नेमा | करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

भूषन बसन भोग सुख भूरी | मन तन बचन तजे तिन तूरी ||
अवध राजु सुर राजु सिहाई | दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई ||
तेहिं पुर बसत भरत बिनु रागा | चंचरीक जिमि चंपक बागा ||
रमा बिलासु राम अनुरागी | तजत बमन जिमि जन बड़भागी ||

दोहा
राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति |
चातक हंस सराहिअत टेंक बिबेक बिभूति || ३२४ ||

देह दिनहुँ दिन दूबरि होई | घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई ||
नित नव राम प्रेम पनु पीना | बढ़त धरम दलु मनु न मलीना ||
जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे | बिलसत बेतस बनज बिकासे ||
सम दम संजम नियम उपासा | नखत भरत हिय बिमल अकासा ||

ध्रुव बिस्वास अवधि राका सी | स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी ||
राम पेम बिधु अचल अदोषा | सहित समाज सोह नित चोखा ||
भरत रहनि समुझनि करतूती | भगति बिरति गुन बिमल बिभूती ||
बरनत सकल सुकचि सकुचाहीं | सेस गनेस गिरा गमु नाहीं ||

दोहा
नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति |
मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति || ३२५ ||

पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू | जीह नामु जप लोचन नीरू ||
लखन राम सिय कानन बसहीं | भरतु भवन बसि तप तनु कसहीं ||
दोउ दिसि समुझि कहत सबु लोगू | सब बिधि भरत सराहन जोगू ||
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं | देखि दसा मुनिराज लजाहीं ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

परम पुनीत भरत आचरनू | मधुर मंजु मुद मंगल करनू ||
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू | महामोह निसि दलन दिनेसू ||
पाप पुंज कुंजर मृगराजू | समन सकल संताप समाजू ||
जन रंजन भंजन भव भारू | राम सनेह सुधाकर सारू ||

छंद:

सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को |
मुनि मन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को ||
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ||
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को ||

सोरठा

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं |
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति || ३२६ ||

मास पारायण - इक्कीसवाँ विश्राम

|| इति श्रीमद्रामचरित मानसे सकल कलिकलुषविध्वंसने द्वितीय सोपान समाप्तः ||
|| अयोध्य काण्ड समाप्त: ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

www.viswakalyanam.org